डॉ.बिभा कुमारी

हिंदी विभाग

विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर

स्नातक प्रतिष्ठा, द्वितीय प्रश्न-पत्र, प्रथम वर्ष

कबीरदास - परिचय

कबीरदास भक्तिकाल के निर्गुण सम्प्रदाय के ज्ञानमार्गी धारा के प्रतिनिधि कवि हैं। कबीर बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। ये दार्शनिक, भक्त, साधक, समाजसुधारक इत्यादि थे। उन्होंने औपचारिक शिक्षा नहीं प्राप्त की थी परंतु जीवन-अनुभव से ज्ञान प्राप्त किया था। अतः ये सच्चे अर्थों में मानवतावादी, विद्वान, ज्ञानी तथा निर्गुण मार्ग के उपासक संत कवि थे। भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा की कोटि में सर्वोच्च स्थान रखने वाले संत कवि कबीर के जीवन के सम्बन्ध में लोगों में काफी मतभेद है। अनेक किंवदंतयां प्रचलित हैं। कबीर ग्रन्थावली में "चौदह सौ पचपन साल भये" लिखा है। इस उक्ति के आधार पर माना जाता है कि इनका जन्म संवत 1455 विक्रमी में काशी में हुआ था। कहा जाता है कि कबीर का जन्म विधवा ब्राम्हणी के गर्भ से हुआ था, लोक – लाज के कारण उसने नवजात शिशु को लहरतारा तालाब के निकट फेंक दिया था। यह शिशु नीमा और नीरू नामक जुलाहा दंपति को मिला था। इसी जुलाहा दंपति ने शिशु का पालन -पोषण किया। वही शिशु बड़ा होकर संत कबीरदास के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल ने अपनी पुस्तक 'अकथ कहानी प्रेम की' में इस किंवदंती को तोड़ दिया है। उनका कथन है कि कबीर विधवा ब्राम्हणी के गर्भ से उत्पन्न नहीं हुए अपितु जन्म से ही जुलाहा थे। समाज में वर्णव्यवस्था के अंतर्गत निम्न समझी जानेवाली जुलाहा जाति के गरीब दंपति के पुत्र थे। कबीर के गुरु के संबंध में भी विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वानों के मतानुसार आकाश – धर्मा गुरु रामानंद इनके गुरु थे। कुछ विद्वान शेख तकी को कबीर का गुरु मानते हैं। पर जहाँ भी रामानंद के बारह शिष्यों का नामोल्लेख है उसमें सर्वोच्च नाम कबीर का ही है। कबीर संत थे परंतु गृहस्थ भी थे, इनकी पत्नी का नाम लोई था। इनके पुत्र का नाम कमाल तथा पुत्री का नाम कमाली था। कबीर फक्कड़ स्वभाव के संत कवि थे। उनका मानना था कि मानवता के लिए वह अपना घर भी जला सकते हैं। उनकी उक्तियों में अनेक स्थानों पर ऐसे विचार प्रकट हुए हैं –

1. "आई मौज फकीर की दिया झोंपड़ा फूँक"
2. "कबीरा खड़ा बाजार में लिए लुकाठी हाथ
   जो घर फूँके आपना सो चले हमारे साथ"
   कबीर घुम्मकड़ प्रवृत्ति के थे, एक स्थान पर टिककर नहीं रहते थे। अपने यायावर स्वभाव के कारण उन्होंने जीवन का सघन और विशद अनुभव प्राप्त किया। अनेक स्थानों की यात्रा, ज्ञान -प्राप्ति और ज्ञान – संचय के लिए सहायक सिध्द हुआ। वे निरंतर भक्ति, ज्ञान, साधना और अनुभव की भट्ठी में स्वयं को पकाते रहे। कबीर निडर स्वभाव के थे, उनकी निर्भीकता के अनेकानेक उदाहरण उनकी कृतियों में प्राप्त होते हैं। कबीर सरल-सहज जीवन के समर्थक थे। वे उदार, सत्यवादी, अहिंसा के पुजारी, बाह्याडंबर विरोधी, क्रांतिकारी, मानवता के पक्षधर और सही मायने में समाज – सुधारक थे।

कबीर के शिष्यों ने उनकी वाणी, विचार और अनुभवों को 'बीजक' के रूप में संकलित किया। 'बीजक' के तीन भाग हैं – साखी, सबद और रमैनी

साखी अर्थात साक्षी। कबीर ने जिस सत्य का अनुभव किया वही साखी में कहा है। कबीर की सखियां दोहा पद में है।

सबद कबीर के पद हैं। आदि ग्रंथों में 'पद' कहा गया है, अनेक स्थानों पर वाणी शब्द का प्रयोग भी मिलता है। वस्तुतः सबद शब्द का अर्थ ज्ञान-सिध्द पुरूष के वे असाधारण वचन हैं जिन्हें आत्म- वाक्य की तरह विश्वास योग्य समझा जाता है। ये पद गेय हैं और इन पदों में आत्मनिवेदन किया गया है।

'रमैनी' सामान्यतः सात-सात चौपाइयों के बाद एक-एक दोहे में रचित है।

कबीर की रचनाओं के वर्ण्य – विषय हैं नीति, ईश्वर – प्रेम, भक्ति, ज्ञानोपदेश, दर्शन, लोकानुभव – वर्णन, कर्म – कांड एवं बाह्याडंबर का विरोध इत्यादि।

कबीर निर्गुण संत कवि हैं। निर्गुण संत कवि ईश्वर के किसी आकार या छवि को नहीं मानते हैं। निर्गुणवादी अवतार और लीला की अवधारणा को भी अस्वीकार करते हैं। कबीर बार- बार 'राम' शब्द का प्रयोग करते हैं, परंतु उनके राम दशरथ के पुत्र नहीं हैं-

"दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना, राम नाम का मरम है आना"

कबीर के 'राम' परम ब्रम्ह के प्रतीक हैं। कबीर की भक्ति जाति का विरोध करती है-

"जाति-पाँति पूछए नहि कोई, हरि को भजै सो हरि को होई"

कबीर समन्वयवादी संत कवि हैं। इन्होंने सहज धर्म का आख्यान किया।